शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में दिनांक 22 मई 2016, को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह का आयोजन

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में दिनांक 22 मई, 2016 को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें संस्थान के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कार्मिकों के साथ साथ वन विभाग, जोधपुर के अधिकारियों, कार्मिकों, स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, पर्यावरण प्रेमियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक श्री एन.के.वासु, भा.व.से. ने जैवविविधता को मुख्य धारा में लाने (Mainstreaming Biodiversity) की आवश्यकता प्रतिपादित की। श्री वासु ने बताया की जैव विविधता में परिवर्तन एवं प्रजातियों का विस्तार एक प्राकृतिक प्रक्रिया है लेकिन मानवीय हस्तक्षेप के कारण जैव विविधता के नुकसान की दर यदि बढ़ जाती है, तो यह चिंता का विषय है। श्री वासु ने वर्तमान जीवन काल में ही हुए जैव विविधता नुकसान का जिक्र करते हुए बताया की जल जैसे संसाधनों का उपयोग करने के लिए हमें उन चीजों पर भी ध्यान देना होगा जिससे किसी तरह की अनुत्क्रमणीय क्षति (irreversible damage) नहीं हो । श्री वासु ने कहा कि इसके लिए किसी संसाधन के उपयोग से पूर्व हमें इसके उपयोग की प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझना होगा ताकि इस तरह कि कार्यविधि (Protocol) विकसित हो कि जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) की बेहतरी भी हो तथा इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों एवं जैव विविधता का कम से कम नुकसान हो। जैव विविधता को समझने एवं इसके लिए जागरूकता की आवश्यकता बताते हुए श्री वासु ने वैज्ञानिकों और शोधार्थियों से ऐसी अनुसंधान परियोजनाएं लेने का आह्वान किया जिससे क्षेत्र विशेष की जैव विविधता के बारे में पर्याप्त सूचनाएँ उपलब्ध हो सकें। श्री वासु ने कहा की सम्पूर्ण पारिस्थितकी तंत्र (Overall Ecosystem) के

दृष्टिकोण से किस जगह किस चीज़ की जरूरत है, यह अनुसंधान द्वारा पता करना होगा। विशेषकर उन्होंने रेगिस्तान क्षेत्र के बारे में किस तरह के वृक्षारोपण करने चाहिए जैसे ब्लॉक प्लांटेशन या कौनसी प्रजाति वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त रहेगी आदि मुद्दों की ओर ध्यान खींचते हुए कहा कि अनुसंधान यदि वैज्ञानिक क्षमता एवं वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर उपयुक्त प्रजातियों का पौधारोपण (Intervention of Species) सुझा सकें तो, बेहतर होगा। श्री वासु ने अंतरप्रजातिय निर्भरता (Inter Species Dependence) की महत्ता बताते हुए जैव विविधता संरक्षण का आह्वान किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर, श्री वी.एस.बोहरा, भा.व.से. ने कहा कि जल, जंगल, ज़मीन एवं वायु जीवन के आधार है, इन्हें हम भावी पीढ़ियों के लिए बचा कर रखें, इस हेतु न केवल खुद हमें जागरूक होना होगा बल्कि विभिन्न माध्यमों से औरों को भी जागरूक करना होगा। श्री बोहरा ने जनसंख्या वृद्धि के कारण बढ़ती आवश्यकताएँ तथा जलवायु परिवर्तन जैसे कारणों से वन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाब तथा वन्य जीवों के महत्व तथा उनके आश्रय स्थल का जिक्र कर इनके संरक्षण की आवश्यकता प्रतिपादित की। श्री बोहरा ने जैव विविधता संरक्षण के लिए अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता बताई।

समारोह के विशिष्ट अतिथि भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री गुरु प्रसाद व्यास ने जैव विविधता संरक्षण हेतु कार्य करने एवं प्राकृतिक संरक्षण हेतु हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने भौतिक सुख सुविधा हेतु जैव विविधता, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश करने के बजाय इन्हें इसे भावी पीढ़ी के लिए भी संरक्षित रखने का आह्वान किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी), जोधपुर के पशुधन एवं चारागाह प्रबंधन प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए.के.मिश्रा ने पशुधन प्रबंधन की जानकारी देते हुए बताया कि इस क्षेत्र की आजीविका का यह मुख्य हिस्सा है। डॉ. मिश्रा ने पशुधन की विभिन्न नस्लों का ब्योरा देते हुए थार की पशु जैव विविधता का उल्लेख किया। डॉ. मिश्रा ने चरागाह विकास के लिए अनुसंधान संस्थानों द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख कर इस तरह के पारंपरिक सामुदायिक संपत्ति संसाधनों (Common Property Resources) के सतत उपयोग और रखरखाव की आवश्यकता बताई। डॉ. मिश्रा ने कहा इनके विकास एवं संरक्षण हेतु पंचायतों का सहयोग लेकर हम सभी को जनभागीदारी से कार्य करना होगा। डॉ. मिश्रा ने इस तरह से जन सहयोग द्वारा जैव विविधता संरक्षण हेतु एक आंदोलन चलाने का आह्वान भी किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने सभी आगुंतकों का स्वागत करते हुए अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के महत्व एवं कार्यक्रम का परिचय करवाया। श्री चौधरी ने प्रकृति प्रदत्त विभिन्न प्रकार की एवं अनूठी जैव विविधता का जिक्र करते हुए मानव जीवन की बेहतरी के लिए इसे मुख्य धारा में लाने का आह्वान किया।

तत्पश्चात जैव विविधता से संबन्धित पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण एवं चलचित्र प्रदर्शन का कार्यक्रम हुआ। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने थार के मरुस्थल की कठिन परिस्थितियों में भी पनपने वाली विभिन्न प्रकार की अनूठी एवं अजूबी जैव विविधता का ब्योरा पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रस्तुत किया। डॉ. सिंह ने प्रस्तुतीकरण द्वारा बाड़मेर जिले के हल्देश्वर में वृक्ष प्रजातियों की अनेकता, रेत के धोरों का चित्रण, फोग(*Calligonum*

pollygonoides) के छत्र (crown) से भी काफी ज्यादा आकार के इसके जड़ विन्यास, विभिन्न वृक्षों/ झाड़ियों की जड़ों से मृदा की संरक्षण प्रक्रिया, वानस्पतिक अवरोध से मृदा का संरक्षण होना आदि पहलुओं की रोचक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी दी।

डॉ. तरुण कान्त, वैज्ञानिक - ई ने जैव विविधता एवं जंगल के पुनरुत्पादन से संबन्धित चलचित्र प्रस्तुत किया।

डॉ. एन.के.बोहरा, वैज्ञानिक-बी ने अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाने से संबन्धित इतिहास और कारणों का खुलासा अपने पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण में किया। डॉ. बोहरा ने राजस्थान की विभिन्न प्रकार की जैव विविधता के संबंध में रोचक और ज्ञान-वर्धक जानकारी दी ।

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग में तकनीकी सहायक श्रीमती मीता सिंह तोमर ने विश्व भर के जैव विविधता के आकर्षण के केंद्र (Hot Spots) तथा उनकी अनूठी जैव विविधता से संबन्धित प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया।

समारोह में वन विभाग, राजस्थान के सेवानिवृत्त वाहन-चालक, श्री पूरण सिंह ने अतीत और वर्तमान के परिपेक्ष्य में पर्यावरण से संबन्धित राजस्थानी में कविता सुनाई।

कार्यक्रम में क्षेत्रीय वन अधिकारी लूणी, श्री गनपत सिंह, मरू वन प्रशिक्षण केंद्र, जोधपुर के क्षेत्रीय वन अधिकारी श्री पूनाराम, वन विभाग के अन्य कार्मिक, पर्यावरण संजीवनी संस्थान,भावी के श्री गोविंद सीरवी एवं श्री महेश वैष्णव भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई.डी.आर्या ने अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के इस समारोह को रोचक जानकारियों से परिपूर्ण बताते हुए समारोह में सभी आगुंतकों तथा सहयोग देने वालों का आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक - डी श्रीमती भावना शर्मा ने किया ।

संस्थान के जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. एन.के.बोहरा ने कार्यक्रम का कवरेज किया। कार्यक्रम के आयोजन में श्री महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक-द्वितीय तथा श्री तेजाराम का सहयोग रहा ।

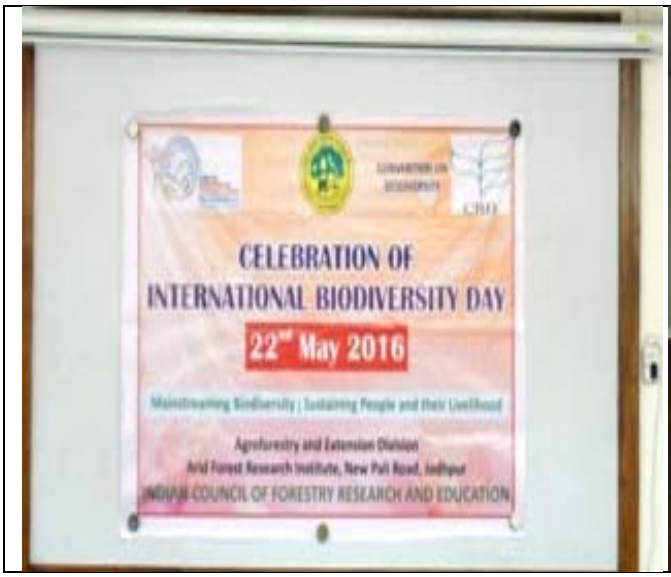

CELEBRATION OF
INTERNATIONAL BIODIVERSITY DAY
22nd May 2016

बढते मानवीय क्रियाकलापो से विलुप्त होती प्रजातियां

जोधपुर। परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है। जिसमे विकास के साथ नई प्रजातियां का उद्भव एवं कुछ प्रजातियां का विलुप्त होना प्राकृतिक कारण है। वर्तमान परिस्थितियो मे मानवीय क्रियाकलापो से इस परिवर्तन मे ऋणात्मक रूप से तेजी आई है। जिसके कारण अनेक प्रजातियां तेजी से लुप्त हो गई है। एवं अन्य संकटग्रस्त क्षेत्र मे पहुंच गई है। यह एक चिन्ता का विषय है तथा इसे हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने एवं संरक्षित करने की जरूरत है। यह उद्गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) के निदेशक एन.के. वासु ने आफरी सभागार मे आयोजित जैव विविधता समारोह मे अध्यक्षीय संबोधन मे व्यक्त कियें । उन्होंने बताया कि हर जीव का प्रकृति मे महत्व है तथा शोध संस्थानो को इस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनो के सरंक्षण एव सवंर्धन हेतु प्रयास करने चाहिए।

आफरी के कार्यक्रम को सम्बोधित करते विषय विशेषज्ञ

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन सरंक्षण, वन विभाग, राजस्थान के वी.एस. बौहरा ने बताया कि जल, जमीन, जंगल वायु ही जीवन का आधार है तथा इनके संरक्षण हेतु हर व्यक्ति को कार्य करना चाहिए। बोहरा ने बताया कि भावी पीढ़ि हेतु स्वच्छ वातावरण के लिए वन एवं वन्य जीवो के सरंक्षण की महत्ती आवश्यकता है। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि जी.पी.डी.व्यास ने जैव विविधता हेतु वास्तविक रूप में कार्य करने तथा प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण हेतु हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने बताया कि वर्तमान परिस्थितियों मे जैव विविधता के विनाश से आने वाली पीढी हेतु भयावह स्थिति उत्पन्न हो सकती है। काजरी के प्रधान वैज्ञानिक एवं जन्तु विज्ञान प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष तथा विशिष्ठ अतिथि डॉ.ए.के. मिश्रा ने सामुदायिक भूमि तथा ओरल, गोचर के विकास एवं सरंक्षण हेतु कार्य करने की आवश्यकता बताई। डॉ.मिश्रा ने इस हेतु सरकारी संस्थानो के साथ -साथ आमजन को भी इस कार्य मे सहयोग करने का आव्हान किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ मे कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष उमाराम चौधरी ने प्रकृति के साथ सांमजस्य बनाने एवं जैन विविधता के संरक्षण हेतु प्रयास करने पर बल दिया। आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.जी.सिंह ने शिवान क्षेत्र तथा हल्देश्वर महादेव मे जैव विविधता पर पत्र वाचन किया जबकि डॉ.अरूण कान्त ने जैव विविधता पर (प्लेनेट अर्थ) नामक लघु फिल्म दिखाई। मीता सिंह तोमर ने विश्व के जैव विविधता हॉट स्पॉट पर वृत चित्र दिखाया जबकि वन विभाग के सेवा निवृत कर्मचारी पूरन सिंह ने कविता पाठ किया। आफरी वैज्ञानिक एवं जन सम्पर्क अधिकारी डॉ.एन.के. बोहरा ने जैव विविधता दिवस एवं राजस्थान की जैव विविधता पर प्रस्तुतिकरण दिया। धन्यवाद आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.आई.डी. आर्या ने दिया। जबकि कार्यक्रम का संचालन भावना शर्मा ने किया।

दैनिक प्रतिनिधि 23-5-2016

डॉ. नवीन कुमार बोहरा
जन सम्पर्क अधिकारी (प्रचार एवं प्रसार)
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान,
जोधपुर (राज.)

परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया : एनके वासु

जैव विविधता दिवस पर हुए कार्यक्रम, संरक्षण की जरूरत बताई

23-5-2016

विशेषज्ञों ने वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने व संरक्षित करने की जरूरत बताई।

जोधपुर | परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें विकास के साथ नई प्रजातियों का उद्भव एवं कुछ प्रजातियों का विलुप्त होना प्राकृतिक कारण है। यह बात शुष्क वन अनुसंधान केंद्र संस्थान (आफरी) जोधपुर के निदेशक एनके वासु ने रविवार को आफरी सभागार में आयोजित जैव विविधता समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आज वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने एवं संरक्षित करने की जरूरत है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षक, वन विभाग राजस्थान के वीएस बोहरा ने भावी पीढ़ी के लिए स्वच्छ वातावरण के लिए वन एवं जीवों के संरक्षण के महत्व

डॉ. नवीन कुमार बोहरा
जन सम्पर्क अधिकारी (प्रचार एवं प्रसार)
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान,
जोधपुर (राज.)

आफरी में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह

(कार्यालय संवाददाता)

जोधपुर, 22 मई। परिवर्तन एक सत्त प्रक्रिया है जिसमें विकास के साथ नई प्रजातियों का उद्‌भव एवं कुछ प्रजातियों का विलुप्त होना प्राकृतिक कारण है। वर्तमान परिस्थितियों में मानवीय क्रियाकलापों से इस परिवर्तन में ऋणात्मक रूप से तेजी आई है जिसके कारण अनेक प्रजातियाँ तेजी से लुप्त हो गई हैं एवं अन्य संकटग्रस्त क्षेत्र में पहुंच गई हैं। यह एक चिन्ता का विषय है तथा इसे हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने एवं सरंक्षित करने की जरूरत है। यह उद्‌गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर के निदेशक एन.के.वासु ने आफरी सभागार में आयोजित जैव विविधता समारोह में अध्यक्षीय संबोधन में व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि हर जीव का प्रकृति में महात्व है तथा शोध संस्थानों को इस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण एवं सवंर्धन हेतु प्रयास करने चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षण, वन विभाग, राजस्थान के वी.एस. बौहरा ने अपने संबोधन में बताया कि जल, जमीन, जंगल एवं वायु ही जीवन का आधार है तथा इनके संरक्षण हेतु हर व्यक्ति को कार्य करना चाहिए। उन्होने कहा कि भावी पीढ़ी हेतु स्वच्छ वातावरण के लिए वन एवं वन्य जीवों के संरक्षण की महत्ती आवश्यकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जी.पी.डी. व्यास ने जैव विविधता हेतु वास्तविक रूप में कार्य करने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने बताया कि वर्तमान परिस्थितियों में जैव विविधता के विनाश से आने वाली पीढ़ी हेतु भयावह स्थिति उत्पन्न हो सकती है। काजरी के प्रधान वैज्ञानिक एवं जन्तु विज्ञान प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. ए.के. मिश्रा ने सामुदायिक भूमि तथा ओरल, गोचर के विकास एवं संरक्षण हेतु कार्य करने की आवश्यकता बताई। डॉ. मिश्रा ने इस हेतु सरकारी संस्थानों के साथ-साथ आमजन को भी इस कार्य में सहयोग करने का आव्हान किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष उमाराम चौधरी ने प्रकृति के साथ सामजस्या बनाने एवं जैव विविधता के संरक्षण हेतु प्रयास करने पर बल दिया। आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने शिवान क्षेत्र तथा हल्देश्वर महादेव में जैव विविधता पर पत्र वाचन किया जबकि डॉ. तरूण कान्त ने जैव विविधता पर (प्लेनेट अर्थ) नामक लघु फिल्म दिखाई। मीता सिंह तोमर ने विश्व के जैव विविधता हॉट स्पॉट पर वृत चित्र दिखाया जबकि वन विभाग के सेवा निवृत कर्मचारी पूरन सिंह ने कविता पाठ किया। आफरी वैज्ञानिक एवं जन सम्पर्क अधिकारी डॉ. एन.के. बौहरा ने जैव विविधता दिवस एवं राजस्थान की जैव विविधता पर प्रस्तुतीकरण दिया।

धन्यवाद ज्ञापन आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई.डी. आर्या ने दिया जबकि कार्यक्रम का संचालन भावना शर्मा ने किया। कार्यक्रम में पर्यावरण संजीवनी संस्थान, भावी के गोविन्द सीरवी, महेश वैष्णव सहित आफरी वन एवं विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में महिपाल विश्नोई, तेजाराम, प्रताप एवं हरीश आदि ने सहयोग किया।

23-5-2016

आफरी में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह

निजी संवाददाता

वर्तमान परिस्थितियों में मानवीय क्रियाकलापों से इस परिवर्तन में ऋणात्मक रूप से तेजी आई है जिसके कारण अनेक प्रजातियाँ तेजी से लुप्त हो गई हैं

जोधपुर। परिवर्तन एक सत्त प्रक्रिया है जिसमें विकास के साथ नई प्रजातियों का उद्भव एवं कुछ प्रजातियों का विलुप्त होना प्राकृतिक कारण है। वर्तमान परिस्थितियों में मानवीय क्रियाकलापों से इस परिवर्तन में ऋणात्मक रूप से तेजी आई है जिसके कारण अनेक प्रजातियाँ तेजी से लुप्त हो गई हैं एवं अन्य संकटग्रस्त क्षेत्र में पहुंच गई हैं। यह एक चिन्ता का विषय है तथा इसे हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने एवं सरंक्षित करने की जरूरत है। यह उद्गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर के निदेशक श्री एन.के. वासु भावसे ने आफरी सभागार में आयोजित जैव विविधता समारोह में अध्यक्षीय संबोधन में व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि हर जीव का प्रकृति में महात्व है तथा शोध संस्थानों को इस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण एवं सवंर्धन हेतु प्रयास करने चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षण, वन विभाग, राजस्थान के श्री वी.एस. बौहरा ने अपने संबोधन में बताया कि जल, जमीन, जंगल एवं वायु ही जीवन का आधार है तथा इनके संरक्षण हेतु हर व्यक्ति को कार्य करना चाहिए। बौहरा ने बताया कि भावी पीढ़ी हेतु स्वच्छ में जैव विविधता के विनाश से आने वाली पीढ़ी हेतु भयावह स्थिति उत्पन्न हो सकती है।काजरी के प्रधान वैज्ञानिक एवं जन्तु विज्ञान प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष तथा विशिष्ठ अतिथि डॉ. ए.के. मिश्रा ने सामुदायिक भूमि तथा ओरल, गोचर के विकास एवं संरक्षण हेतु कार्य करने की आवश्यकता बताई। डॉ. मिश्रा ने इस हेतु सरकारी संस्थानों के साथ-साथ आमजन को भी इस कार्य में सहयोग करने का आव्हान किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी भावसे ने प्रकृति के साथ सामजस्या बनाने एवं जैव विविधता के संरक्षण हेतु प्रयास करने पर बल दिया। आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने शिवान क्षेत्र तथा हल्देश्वर महादेव में जैव विविधता पर पत्र वाचन किया जबकि डॉ. तरूण कान्त ने जैव विविधता पर (प्लेनेट अर्थ) नामक लघु फिल्म दिखाई। मीता सिंह तोमर ने विश्व के जैव विविधता हॉट स्पॉट पर वृत चित्र दिखाया जबकि वन विभाग के सेवा निवृत कर्मचारी पूरन सिंह ने कविता पाठ किया। आफरी वैज्ञानिक एवं जन सम्पर्क अधिकारी डॉ. एन.के. बौहरा ने जैव विविधता दिवस एवं राजस्थान की जैव विविधता पर प्रस्तुतीकरण दिया। धन्यवाद ज्ञापन आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई.डी. आर्या ने दिया जबकि कार्यक्रम का संचालन भावना शर्मा ने किया। कार्यक्रम में पर्यावरण संजीवनी संस्थान, भावी के गोविन्द सीरवी, महेश वैष्णव सहित आफरी वन एवं विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में महिपाल विश्नोई, तेजाराम, प्रताप एवं हरीश आदि ने सहयोग किया।

डॉ. नवीन कुमार बौहरा
जन सम्पर्क अधिकारी (प्रचार एवं प्रसार)
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान,
जोधपुर (राज.)

आफरी में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह

निजी संवाददाता

जोधपुर। परिवर्तन एक सत्त प्रक्रिया है जिसमें विकास के साथ नई प्रजातियों का उद्भव एवं कुछ प्रजातियों का विलुप्त होना प्राकृतिक कारण है। वर्तमान परिस्थितियों में मानवीय क्रियाकलापों से इस परिवर्तन में ऋणात्मक रूप से तेजी आई है जिसके कारण अनेक प्रजातियाँ तेजी से लुप्त हो गई हैं एवं अन्य संकटग्रस्त क्षेत्र में पहुंच गई हैं। यह एक चिन्ता का विषय है तथा इसे हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने एवं सरंक्षित करने की जरूरत है। यह उद्गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर के निदेशक श्री एन.के. वासु भावसे ने आफरी सभागार में आयोजित जैव विविधता समारोह में अध्यक्षीय संबोधन में व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि हर जीव का प्रकृति में महात्व है तथा शोध संस्थानों को इस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण एवं सवंर्धन हेतु प्रयास करने चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षण, वन विभाग, राजस्थान के श्री वी.एस. बौहरा ने अपने संबोधन में बताया कि जल, जमीन, जंगल एवं वायु ही जीवन

का आधार है तथा इनके संरक्षण हेतु हर व्यक्ति को कार्य करना चाहिए। बौहरा ने बताया कि भावी पीढ़ी हेतु स्वच्छ वातावरण के लिए वन एवं वन्य जीवों के संरक्षण की महत्ती आवश्यकता है। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि श्री जी.पी.डी. व्यास ने जैव विविधता हेतु वास्तविक रूप में कार्य करने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने बताया कि वर्तमान परिस्थितियों में जैव विविधता के विनाश से आने वाली पीढ़ी हेतु भयावह स्थिति उत्पन्न हो सकती है।काजरी के प्रधान वैज्ञानिक एवं जन्तु विज्ञान प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष तथा विशिष्ठ अतिथि डॉ. ए.के. मिश्रा ने सामुदायिक भूमि तथा ओरल, गोचर के विकास एवं संरक्षण हेतु कार्य करने की आवश्यकता बताई। डॉ. मिश्रा ने इस हेतु सरकारी संस्थानों के साथ-साथ आमजन को भी इस कार्य में सहयोग करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी भावसे ने प्रकृति के साथ सामजस्या बनाने एवं जैव विविधता के संरक्षण हेतु प्रयास करने पर बल दिया। आफ्री के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने शिवान क्षेत्र तथा हल्देश्वर महादेव में जैव विविधता पर पत्र वाचन किया जबकि डॉ. तरूण कान्त ने जैव विविधता पर (प्लेनेट अर्थ) नामक लघु फिल्म दिखाई। मीता सिंह तोमर ने विश्व के जैव विविधता हॉट स्पॉट पर वृत चित्र दिखाया जबकि वन विभाग के सेवा निवृत कर्मचारी पूरन सिंह ने कविता पाठ किया। आफ्री वैज्ञानिक एवं जन सम्पर्क अधिकारी डॉ. एन.के. बौहरा ने जैव विविधता दिवस एवं राजस्थान की जैव विविधता पर प्रस्तुतीकरण दिया। धन्यवाद ज्ञापन आफ्री के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई.डी. आर्या ने दिया जबकि कार्यक्रम का संचालन भावना शर्मा ने किया।

23-5-2016

आफरी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता। जलतेदीप

जल, जमीन, जंगल और वायु ही जीवन का आधार

आफरी में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया

जोधपुर, 22 मई (कासं)। परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें विकास के साथ नई प्रजातियों का उदभव एवं कुछ प्रजातियों का विलुप्त होना प्राकृतिक कारण है। वर्तमान परिस्थितियों में मानवीय क्रियाकलापों से इस परिवर्तन में ऋणात्मक रूप से तेजी आई है जिसके कारण अनेक प्रजातियाँ तेजी से लुप्त हो गई हैं एवं अन्य संकटग्रस्त क्षेत्र में पहुंच गई हैं। यह एक चिन्ता का विषय है तथा इसे हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा जैव विविधता को समझने एवं सरंक्षित करने की जरूरत है। यह उदगार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक एनके वासु ने आफरी सभागार में आयोजित जैव विविधता समारोह में अध्यक्षीय संबोधन के दौरान व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि हर जीव का प्रकृति में महत्व है तथा शोध संस्थानों को इस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण एवं सवंर्धन हेतु प्रयास करने चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य वन संरक्षण वीएस बोहरा ने कहा कि जल, जमीन, जंगल एवं वायु ही जीवन का आधार है तथा इनके संरक्षण हेतु हर व्यक्ति को कार्य करना चाहिए। विशिष्ठ अतिथि जीपीडी व्यास ने जैव विविधता हेतु वास्तविक रूप में कार्य करने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता जताई। काजरी के प्रधान वैज्ञानिक डा. एके मिश्रा ने सामुदायिक भूमि तथा ओरल, गोचर के विकास एवं संरक्षण हेतु कार्य करने की आवश्यकता बताई। प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के अध्यक्ष उमाराम चौधरी ने प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाने एवं जैव विविधता के संरक्षण हेतु प्रयास करने पर बल दिया। डा. जी. सिंह ने शिवान तथा हल्देश्वर महादेव में जैव विविधता पर पत्र वाचन किया जबकि डॉ. तरूण कांत ने जैव विविधता पर (प्लेनेट अर्थ) नामक लघु फिल्म दिखाई। मीता सिंह तोमर ने विश्व के जैव विविधता हॉट स्पॉट पर वृत चित्र, पूरन सिंह ने कविता पाठ तथा जनसम्पर्क अधिकारी डा. एनके बौहरा ने राजस्थान की जैव विविधता पर प्रस्तुतीकरण दिया। अंत में डा. आईडी आर्या ने आभार जताया। संचालन भावना शर्मा ने किया।